No. of Printed Pages : 5

MSK–001

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2023

एम.एस.के.-001 : संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश : *सभी खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. अधोलिखित में से किसी **एक** की विस्तृत व्याख्या कीजिए : 20

अथ के ते विभावनुभावव्यभिचारिण इत्यपेक्षयां विभावमाहरव्याद्युद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः।

ये हि लोके रामादिगतरहितहासादीनामुद्बोध कारणानि सीतादयस्त एव काव्ये नाट्ये च निवेशिताः सन्तः

विभाव्यन्ते आस्वादाङ्कुरप्रादुर्भावयोग्याः क्रियन्ते सामाजिकरत्यादि भावाऽभिः इति विभावा उच्यन्ते। तदुक्तं भर्तृहरिण–

शब्दोपहितरूपांस्तान् बुद्धेविषयतां गतान्।

प्रत्यज्ञानिव कंसदीन् साधनत्वेन मन्यते॥ इति।

अथवा

ननु कश्चिदेवांशाऽत्र दुष्टो न पुनःसर्वोऽपीति चेत्, तर्हि यत्रांशे दोषः सोऽकाव्यत्व प्रयोजकः, यत्र ध्वनिः स उत्तमकाव्यत्व प्रयोजक इत्यंशाभ्या मुभयत आकृष्यमागमिदं काव्यम काव्यं वा किमपि न स्यात्। न च कञ्चिदेवांशं काव्यस्य दूषयन्तः श्रुतिदुष्टादयो दोषाः, किं तर्हि सर्वमेव काव्यम्। तथाहि–काव्यात्मभूतस्य रसस्यानपकर्षकत्वे तेषां दोषत्वमपि नाङ्गीक्रियते। अन्यथा नित्यदोषानि–त्यदोषत्वव्यस्थाऽपि न स्यात्। तदुक्तं ध्वनिकृता—

"श्रुतिदुष्टादयो दोषा अनित्या ये च दर्शिताः।

ध्वन्यात्मन्येन मृङ्गारे ते हेया इत्युदाहृताः॥"

किञ्च एव काव्यं प्रविरल विषयं निर्विषयं वा स्यात्

सर्वथा निर्दोषा स्येकान्तम् संभवात्।

2. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलावि प्रयुक्तः स कामो
नीत्वा मासात्कनकवलय भ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमा श्लिष्ट सानुं
व प्रकीडापरिगणतगण प्रेक्षणीयं ददर्श॥

(ख) आश्वास्यैवं प्रथमविरहोदग्रशोकां सखी ते
शैलादाशु त्रिनयनवृषोत्खात कूटान्निवृतः।
साभिज्ञान प्रहित कुशलैस्तद्वचोभिर्ममापि
प्रातः कुन्द प्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः॥

(ग) तुलनं चाद्रिराजस्य समुद्रस्य च तारणम्।
ग्रहणं चानिलस्येव चारुदत्तस्य दूषणम्॥

(घ) यस्यां यक्षाः सितमणिमयानेत्य हर्म्यस्थलानि।
ज्योतिश्छाया कुसुमरचितान्युत्तम स्त्री सहायाः॥
आसेवन्ते मधु रतिफलं कल्पवृक्षप्रसूतं।
त्वद्गम्भीर ध्वनिष् शनकैः पुष्करेठवाहतेष्॥

3. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए : 10×2=20

(क) जानामि चारुदत्तं वसन्तसेनं च सुष्ठु जानामि।
प्राप्ते च राजकार्ये पितरमप्यहं न जानामि॥

(ख) वरदान सम्प्राप्तिः काव्यसंहार इष्यते।

नृपदेशादिशान्तिस्तु प्रशस्तिर भिधीयते॥

(ग) सर्वः खलु भवति लोके लोकः सुखसं स्थितानां चिन्तायुक्तः।

विनिपतितानां नराणां प्रियकारी दुर्लभो भवति॥

(घ) क्षणेन ग्रन्थिः क्षणज्लिका ने क्षणेन बालाः क्षगकुन्तला वा।

क्षणेन मुक्ताः क्षणमूर्ध्वचूडाश्चिज्ञो विचित्रोऽराजश्यालः॥

खण्ड—ख

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

10×2=20

(क) 'मृच्छकटिकम्' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

(ख) महाकाव्य के उद्भव एवं विकास पर विस्तारपूर्वक लिखिए।

(ग) 'साहित्य दर्पण' के अनुसार काव्य के प्रयोजन को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित कीजिए।

(घ) लक्षणा शक्ति को निरूपित करते हुए उनके भेदों पर विस्तारपूर्वक लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) ध्वनि भेदों को स्पष्ट कीजिए।

(ख) रूपक का भेदों सहित वर्णन कीजिए।

(ग) मुख सन्धि का लक्षण वर्णित कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का चरित्र-चित्रण लिखिए : 2×5=10

(क) बसन्तसेना

(ख) चारुदत्त

(ग) यक्ष

(घ) यक्षिणी